

व भारतीम् MBh. 5, 4929. माधु साधिति सर्वत्र निश्चेरुः स्तुतिसंकिताः । वाचः 6, 1635. गाथा निश्चरति स्म LALIT. ed. Calc. 3, 18. — caus. hervorgehen lassen ebend.

— विनिस् nach allen Richtungen hervorgehen: यद्यर्द्धधामिरेभ्याद्विनिस्स्य । पृथग्धूमा विनिश्चरति ÇAT. Br. 14, 5, 4, 10. MBh. 2, 2394. तेषां विन्यमानानां धनुषामर्कवर्चताम् । विनिश्चेरुः प्रभा दिव्याः 4, 1322.

— परा weggehen, sich entfernen: आ च परा च चरति RV. 10, 17, 6. 1, 164, 31.

— परि 1) sich umherbewegen, umherwandeln; umwândeln (mit dem acc.): अया इव परि चरति देवाः RV. 10, 116, 9. परि घृणा चरति 1, 52, 6. चरत्तं परि तस्मिन् 6, 1. भूम्या अत्तं पर्येके चरति 10, 114, 10. परि घोतनिं चरत्तं अत्रैवा 12, 7. पर्यचरत्स्वेषु वेश्मसु HARIV. 9023. कङ्काः श्येनास्तथा गृधा नीचैः परिचरति च R. 6, 16, 11. सभाम् MBh. 3, 2349. 7, 221. R. 5, 32, 5. — 2) Jmd aufwarten, bedienen, besorgen; seine Sorge ganz auf Jmd oder Etwas richten, sich ganz Jmd oder Etwas hingeben; mit dem acc.: (अग्निम्) मुञ्जातासुः परि चरति वीराः RV. 7, 1, 15. 3, 7, 2. अथ स्मा ते परि चरत्यजरं श्रुष्टीवानो न 1, 127, 9. वैवाक्यमग्निम् ÇĀṆKH. GRHJ. 1, 17. गृह्यम् ĀCY. GRHJ. 1, 7. Pār. GRHJ. 2, 14. KAUC. 94. KHAND. UP. 4, 10, 1. 2. 4. भवेयुरग्रयस्तस्य परिचरिषास्तु नित्यशः MBh. 3, 14028. युक्तः परिचरेदन्म (गुरुम्) M. 2, 243. ब्रह्म पर्यचरत्तत्रम् — ब्रूहाः पर्यचरन्विशः MBh. 1, 3977. HARIV. 2347. पतिम् MBh. 3, 8584. — 1, 2767. 3, 12922. 13662. 14684. 12, 1055. गात्रसंवाहनेश्चैव अमापनयनेस्तथा । शक्रः सर्वेषु कालेषु दितिं परिचचार ॥ R. 1, 46, 11. 47, 11. 2, 40, 25. 3, 77, 30. BHARTṚ. 3, 77. KATHAS. 4, 136. BHĀG. P. 3, 23, 1. 6, 18, 55. रामस्य पतिं परिचरन्वने R. 2, 60, 6. BHĀG. P. 4, 8, 20. नित्यं शस्त्रं परिचरन् R. 3, 13, 19. आधे किञ्चा कुठारेण निम्बं परिचरेत्तु यः 2, 35, 14. परिचर्य तथा वेदम् MBh. 12, 2342. Statt भवतोः परिचर्य JĀGAD. 2, 46 hat R. GORR. 2, 66, 48: भवतो परि. — caus. 1) umgeben: शाखाभिः परिचार्य KAUC. 83. परिचारयति कण्टकैर्वृक्षम् P. 3, 1, 87. VĀRTI. 7, Sch. med. sich lagern um: परिचारयते कण्टका वृक्षम् ebend. — 2) med. sich bedienen —, aufwarten lassen: जैवलं परिचारयमाणम् ÇAT. Br. 14, 9, 4, 1. आभिर्मत्प्रताभिः परिचारयस्व KATHOP. 1, 25. — Vgl. परिचर u. s. w.

— प्र 1) hervortreten, zum Vorschein kommen: (यथा) ताः (मरीचयः) पुनः पुनरुदयतः (अर्कस्य) प्रचरति PRAÇNOP. 4, 2. नैशानि सर्वभूतानि प्रचरति ततस्ततः R. 1, 35, 18. 3, 5, 9. 48, 17. प्राणाः प्रालीयत ततः पुनश्च प्रचचार ह MBh. 14, 692. fgg. प्रचीर्णं 690. fgg. इति स्म वाचः श्रूयते प्रचरत्यस्ततः 6, 2189. — 2) voranschreiten zu, gelangen zu (acc.): अवीरका प्र चरा सोमं दुर्यान् RV. 1, 91, 19. 7, 31, 10. प्र चरा पुष्टिमर्क्षं 8, 48, 6. दिवस्यशः प्र चरतीदमस्य AV. 4, 16, 4. ये तीर्थानि प्रचरति सूकाहेस्ताः VS. 16, 61. अन्तर्वापीषु प्र चरा सु जीवसे RV. 9, 82, 4. besuchen: तस्यास्तीर्थं प्रचरितम् R. 2, 35, 5. — 3) wandeln: निगूढः प्रचरति PRAB. 33, 10. अथ च यावतार्थेन नभोवीथ्या प्रचरति तं कालमयनमाचक्षते BHĀG. P. 5, 22, 6. in Umlauf sein, in Umlauf kommen: तावद्रामायणकथा लेखिषु प्रचरिष्यति R. 1, 2, 40, 41. 6, 112, 101. ग्रन्थस्य प्रचरतो ऽस्य VARĀH. BRH. S. 106, 6. — 4) an's Werk gehen, nam. an das heilige Werk; Etwas verrichten; mit dem instr. des Gegenstandes an oder mit welchem Etwas verrichtet wird: प्र वामर्धर्षुश्चरतु पर्यस्वान् AV. 7, 74, 5. 20, 133, 4. नमो ऽग्र्ये प्रचरते पुरुषाय च ते नमः 9, 3, 12. न वै ब्रह्मा प्रचरति legat nicht II. Theil.

Hand an bei den liturgischen Verrichtungen ÇAT. Br. 3, 8, 2, 2. लोकितो-क्षीषाः प्रचरत्युविजः sie tragen zu der Handlung rothe Kopfbinden KĀTJ. ÇA. 22, 3, 15. AIT. Br. 1, 13. ÇAT. Br. 3, 8, 2, 23. 14, 1, 2, 2. पुरा प्रचरितोराग्रोधीये कौतव्यम् ved. P. 3, 4, 16, Sch. उपोषु TBr. 1, 3, 4, 5. प्रवर्गेण प्रचरिष्यामः AIT. Br. 1, 18. ÇAT. Br. 3, 4, 4, 1. उपसदा AIT. Br. 1, 23. मारुत्या वशया TBr. 1, 3, 4, 4. हविर्भिः ÇAT. Br. 2, 5, 2, 35. वपया 3, 8, 2, 2. चरूणा 4, 4, 2, 1. TS. 6, 2, 2, 4. 3, 40, 1. KĀTJ. ÇA. 10, 1, 27. 18, 4, 23. — भूयवत्प्रचरिष्यामि zu Werke gehen, verfahren HARIV. 14470. चिकित्सकानां सर्वेषां मिथ्या प्रचरतो दमः falsch verfahren M. 9, 284. शास्त्रदद्या यथैव बुद्धा प्रचरस्व MBh. 12, 4195. thätig sein in, — bei, beschäftigt sein mit (loc.): अथर्षुरपि निर्मोहः प्रचचार महामखे MBh. 14, 815. चिकित्सायां प्रचरतु 13, 4569. देहेन्द्रियप्राणमनोधियो ऽमी यदंशविद्वाः प्रचरति कर्मसु BHĀG. P. 6, 16, 24. — 3) vor sich gehen, von Stellen gehen: प्रवर्गेषु प्रचरतु BHĀG. P. 5, 3, 2. — 6) thun, vollziehen, treiben: यैः कर्मभिः प्रचरितैः शुश्रूष्यस्ते द्विजातयः M. 10, 100. — caus. laufen —, herumgehen —, weiden lassen: अश्वं प्रचारयामास वाजिमेधाय दीक्षितः HARIV. 785. — Vgl. प्रचर u. s. w.

— संप्र 1) sich in Bewegung setzen: प्रगृह्य रत्नांसि मङ्गायुधानि पुगात्तवाता इव संप्रचेरुः R. 6, 16, 105. — 2) vor sich gehen, von Stellen gehen, Statt finden: संप्रचरतु नानापागेषु BHĀG. P. 5, 7, 6. अथ प्रभृति चैवेकं लोके संप्रचरिष्यति । पुण्यकेषु च सर्वेषु परमन्तयमेव च ॥ MBh. 13, 4643.

— प्रति zu Jmd treten, sich nähern: अन्नावधं प्रति चरत्यनैः RV. 10, 1, 4. देवताभिरेव देवताः प्रतिचरति TS. 2, 2, 9, 7. — caus. in Umlauf bringen, verbreiten: वृक्षपतिमते चैव लोकेषु प्रतिचारिते MBh. 12, 12742.

— वि 1) nach verschiedenen Seiten sich hinausbewegen, hinausstreben, sich verbreiten: अर्चयः RV. 1, 36, 3. श्रुचयः 6, 6, 3. वि मे मनश्चरति हूरध्राधीः 9, 6. मा ते मनो विध्वद्वाग्निं चारीतु 7, 25, 1. शब्दाः स्पर्शास्तथा गन्धा विचरति मनःप्रियाः MBh. 12, 3766. धनिः VARĀH. BRH. S. 19, 13. अग्निः 31 (30), 13. — 2) in's Feld ziehen, einen Angriff machen: कलिः प्रमुतो भवति स(राजा) ज्ञापद्वापरं युगम् । कर्मस्व-युगतस्त्रेता विचरन्तु (KULL.: [यदा] यथाशास्त्रं पुनः कर्माण्यनुतिष्ठन्विचरति) कृतं युगम् ॥ M. 9, 302; vgl. AIT. Br. 7, 14, wo der schlafende, der erwachende, der sich aufrichtende und der gehende König mit den vier Weltaltern verglichen wird. विचरति मङ्गीपास्ता यात्रार्थं विजिगीषवः R. 3, 22, 7. ततो द्वैणिर्महावीर्यः पार्थस्य विचरिष्यतः । विवरं सूक्ष्मानोक्त्व श्यो चिच्छेद् नुरेण ह ॥ MBh. 4, 1906. अनेन तं यदास्त्रेणा संग्रामे विचरिष्यसि 3, 1696. व्यव-रत्पतनाक्षरे 7, 488. — 3) zerrinnen, ablaufen: वृत्रस्य निणयं वि चरत्या-यः RV. 1, 32, 10. यस्य द्यावो न विचरति मानुषा dessen Tage nicht ablaufen nach Menschenart 31, 1. — 4) herumstreichen, sichergehen, laufen: सूर्या मासा विचरता RV. 10, 92, 12. AV. 20, 127, 11. सूर्य एका विचरते MBh. 3, 17353. उत्पतत इवाकाशे व्यचरन्ते कृत्योत्तमाः 758. अन्तरीनचरो ह्यस्मि कामतो विचरामि च HIp. 2, 31. तमसातीरे विचरतोः — क्रौञ्चयोः R. 1, 2, 12. N. 1, 18. विचरितमृगयूथानि — वनानि VIKR. 153. रात्रौ न विचरेयुस्ते ग्रामेषु नगरेषु च M. 10, 54. तीर्थक्षितस्ततस्तस्या विचचार MBh. 3, 15558. 2486. मृगव्याधो विचरन्गृह्णे वने N. 11, 25. (कथम्) पद्मो रामो महारण्ये वत्से मे विचरिष्यति R. 2, 12, 94. 96, 22. 3, 3, 18. BHARTṚ. 1, 22. Megh. 61. PĀṆKAT. 230, 17. BHĀG. P. 1, 4, 6. गृहे 6, 14, 44. मार्गान्वङ्गवि-